Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub:- Business Organisation (Subsidiary)
B.Com Part-1st, Paper:- 1st
SNSRKS College SAHARSA

Date: Lecture:-37
Page:

B.Com Part-1st Sub:- Business Organisation (Subsidiary)

*Introduction

* Need And Importance of Management in India
(भारत में प्रबन्ध की आवश्यकता एवं महत्व)

भारत एक विकासशील देश है। प्राकृतिक एवं मानवीय साधनों की दृष्टि से यह एक धनी राष्ट्र है। यदि देश के हित में विधिवत इन साधनों का उपयोग किया जाए तो देश को शीघ्र ही विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में लाकर खड़ा किया जा सकता है। देश में पंच-वर्षीय योजनाओं के माध्यम से एक समाजवादी समाज की रचना करने का बीड़ा हमारी सरकार ने उठाया है। देश का द्रुत गति से आर्थिक विकास करने के लिये आधारभूत एवं भारी उद्योगों की स्थापना की गई है। देश में हरित-क्रान्ति के क्षेत्र में विस्तार करने हेतु कई संघनन कृषि कार्यक्रम प्रारंभ किये गए है।

हमारा देश ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी दिन-दूनी, रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। इतना होते हुए भी हम अपने वांछित स्तरों पर आर्थिक विकास नहीं कर पाये है। इनके कई कारण है। हमारी जनसंख्या में तेजी निरंतर वृद्धि हो रही है। श्रम-पूँजी के विवाद आये दिन होते रहते है। कारखानों में हड़तालें एवं तालाबन्दी तो एक आम बात हो गई है। हमारे यहाँ उत्पादन की लागत में बड़ा ही अपव्यय होता है। विभिन्न उत्पादकों एवं निर्माताओं में असहयोग है तथा व्यवसाय का संगठन बड़ा ही दूषित, अपर्याप्त एवं असन्तोषजनक है। हमारी उत्पादन सामग्री निम्न स्तर की है। औद्योगिक अनुसंधान का अभाव है तथा देश में अप्रचलित विपणन विधियों का बोलबाला है। हमारा श्रमिक अज्ञानी, अकुशल एवं अशिक्षित है। कर्मशीलता के स्थान पर आलस्य एवं भाग्यवादिता का बोलबाला है। पूँजीपतियों द्वारा हमारी श्रम-शक्ति तथा उपभोक्ता वर्ग दोनों का तरह-तरह से शोषण किया जाता है। बेकारी की समस्या अपना दिनों-दिन भयंकर रूप धारण करती चली जा रही है। हमारे

Scanned with CamScanner

Date: .....
Page: .....

साधन सीमित है। अतः अब हम उनका दुरुपयोग किया जाना अधिक समय तक सहन नहीं कर सकेंगे। हमारें देश में पूँजी का अभाव है। आज भी लगभग 18.16 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा के नीचे स्तर पर अपना जीवन-यापन कर रही है।

उपरोक्त समस्याओं का समाधान करने के लिये भारत में सुनियोजित प्रबन्ध की सबसे अधिक आवश्यकता है। स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाँधी के शब्दों में "हमारे जैसे विकासशील समाज के लिये प्रबन्ध को सदैव ही अधिकाधिक योगदान देना है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि निजी (Private) तथा सार्वजनिक (Public) दोनों क्षेत्र मिलाकर इस दिशा में और अधिक सक्रिय कदम उठायें ताकि हमारा राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर हो।

भारत में प्रबन्ध की आवश्यकता एवं महत्व निम्न कारणों से है:-

(1) आर्थिक विकास द्रुतगति से करने के लिये।
(2) पंचवर्षीय योजनाओं को सफल बनाने के लिये।
(3) उत्पादन एवं उत्पादकता दोनों में वृद्धि के लिये।
(4) देश में सीमित साधनों का देश में अधिकतम उपयोग करने के लिये।
(5) अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में विदेशी प्रतिस्पर्द्धा का सामना करने एवं निर्यात वृद्धि के लिये।
(6) सामाजिक उत्तरदायित्वों की पूर्ती के लिये।
(7) देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, अकुशलता, लालफीताशाही आदि बुराइयों को दूर करने के लिये।
(8) सरकारी तन्त्र से अकुशलता, उत्तरदायित्वहीनता एवं अकर्मण्यता को दूर करने के लिये।
(9) परम्परागत प्रबन्ध के स्थान पर पेशेवर एवं वैज्ञानिक प्रबंध को और अधिक विकसित करने तथा लागू करने के लिये।

Scanned with CamScanner

Date: .....
Page: .....

(10) न्यूनतम प्रयत्नों से अधिकतम परिणामों की प्राप्ति के लिये।
(11) श्रम-समस्याओं का संतोषजनक ढंग से समाधान करने के लिये।
(12) निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये — नियंत्रण करो या समाप्त हो जाओ के नारे को क्रियान्वित करने के लिये।
(13) वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिवर्तनों को शीघ्रता एवं प्रभावी ढंग से लागू करने के लिये।
(14) व्यक्तियों के विकास के लिये।
(15) आधारभूत औद्योगिक सुविधाओं (शक्ति, संचार साधन, परिवहन, औद्योगिकी, जल आदि) की व्यवस्था करने के लिये।
(16) रोजगार के साधनों में वृद्धि करने के लिये तथा
(17) 21 वी शताब्दी में प्रवेश करने हेतु तैयार करने के लिये।
(18) अधिकारी तथा अधीनस्थों में मधुर सम्बन्धों की स्थापना के लिये।
(19) देश में सन्तुलित एवं चहुँमुखी प्रगति करने के लिये तथा
(20) औद्योगिक प्रजातन्त्र की स्थापना करने के लिये।

The end

Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub:- Business Organisation
(Subsidiary)
B.Com Part 1st
Paper:-
SNSRKS College, SAHARSA

Scanned with CamScanner